इकाई 13 संस्कृत ध्वनि-परिवर्तन: स्वर सन्धि एवं विसर्ग सन्धि

इकाई की रूपरेखा

13.0 उद्देश्य

13.1 प्रस्तावना

13.2 संस्कृत ध्वनि–परिवर्तन (सन्धि) का सामान्य परिचय

13.3 संस्कृत सन्धि भेद

13.3.1 स्वर या अच् सन्धि

13.3.2 व्यञ्जन या हल् सन्धि

13.3.3 विसर्ग सन्धि

13.4 स्वर-सन्धि के प्रकार

13.4.1 दीर्घ सन्धि

13.4.2 यण् सन्धि

13.4.3 गुण सन्धि

13.4.4 वृद्धि सन्धि

13.4.5 अयादि सन्धि

13.5 विसर्ग-सन्धि

13.5.1 उत्व सन्धि

13.5.2 सत्व सन्धि

13.5.3 रत्व सन्धि

13.5.4 लोप सन्धि

13.6 बोध/ अभ्यास प्रश्न

13.7 सारांश

13.8 शब्दावली

13.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

13.10 बोध/ अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

13.0 उद्देश्य

इस इकाई का प्रमुख उद्देश्य संस्कृत ध्वनिजन्य परिवर्तन अर्थात् सन्धि का ज्ञान

कराना है। संस्कृत में सन्धि तीन प्रकार की होती हैं। इस इकाई में केवल स्वर एवं विसर्ग सन्धि का ही ज्ञान कराया जाएगा।

13.1 प्रस्तावना

जब दो ध्वनियाँ बहुत अधिक पास-पास (जल्दी-जल्दी) उच्चरित होती हैं, तो वे एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं एवं इस प्रभाव के कारण उनमें कुछ परिवर्तन भी हो जाता है। इस प्रक्रिया को संस्कृत में संहिता या सन्धि कहा जाता है। इसे हम ध्वनि परिवर्तन भी कह सकते हैं। सन्धि का सामान्य अर्थ है- मेल या मिलना अर्थात् दो वर्णों का मिलना। जब दो वर्ण पास-पास आते हैं, तब निकटता के कारण पहले शब्द के अन्तिम वर्ण और दूसरे शब्द के प्रथम वर्ण में अथवा दोनों में कुछ परिवर्तन आ जाता है। वर्णों के मध्य होने वाले इसी परिवर्तन को "सन्धि" कहते हैं।

13.2 संस्कृत ध्वनि–परिवर्तन (सन्धि) का सामान्य परिचय

'सन्धि' शब्द सम् उपसर्गपूर्वक डुधाञ् (धा) धातु से 'उपसर्गे धोः किः' सूत्र से 'कि' प्रत्यय करने पर निष्पन्न होता है । सन्धि का सामान्य अर्थ है- 'मेल' या 'मिलाना' । व्याकरणशास्त्र में दो वर्णो के मेल को 'सन्धि' कहा जाता है । अत्यन्त समीपवर्ती दो वर्णों के मेल से जो परिवर्तन अथवा विकार आता है, उसे "सन्धि" कहते हैं । जब दो वर्ण पास-पास आते हैं, तब निकटता के कारण पहले शब्द के अन्तिम वर्ण और दूसरे शब्द के प्रथम वर्ण में अथवा दोनों में कुछ परिवर्तन आ जाता है । वर्णों के मध्य होने वाले इसी परिवर्तन को "सन्धि" कहते हैं। जैसे- "राम" और "आलय" में राम के अन्तिम स्वर वर्ण 'अ' तथा आलय के प्रथम स्वर वर्ण 'आ' के मिलने से अथवा सन्धि होने से "हिमालय" ऐसा रूप बना ।

13.3 संस्कृत सन्धि-भेद

भाषा में मुख्य दो ही प्रकार के वर्ण होते हैं- स्वर और व्यञ्जन । जब ये वर्ण अत्यंत समीप में उच्चरित किये जाते हैं, तो इनमें सन्धिगत परिवर्तन होते हैं । इन परिवर्तनों के आधार पर सन्धि तीन प्रकार की होती है-

13.3.1 स्वर या अच् सन्धि

जब दो समीपवर्ती स्वर वर्णों के मेल से परिवर्तन होता है, तो वह "स्वर सन्धि" कहलाती है । जैसे- विद्या + आलयः = विद्यालयः । "विद्या" और "आलय" में विद्या के अन्तिम स्वर वर्ण 'आ' तथा आलय के प्रथम स्वर वर्ण 'आ' इन दोनों स्वर

वर्णों के मिलने से स्वर सन्धि हुई है । ध्यान रहे स्वर सन्धि में प्रथम एवं द्वितीय दोनों स्वर ही होंगे ।

13.3.2 व्यञ्जन या हल् सन्धि

जब पूर्व पद का अन्तिम वर्ण व्यञ्जन और उत्तर पद के प्रथम वर्ण स्वर अथवा व्यञ्जन का मेल होता है, तब परिवर्तन व्यञ्जन वर्ण में होता है । तो यह "व्यञ्जन सन्धि" कहलाती है । जैसे- जगत् + ईश्वर = जगदीश्वर। "जगत्" और "ईश्वर" में जगत् का अन्तिम व्यञ्जन वर्ण 'त्' तथा ईश्वर के प्रथम स्वर वर्ण 'ई' इन दोनों व्यञ्जन एवं स्वर वर्णों के मिलने से व्यञ्जन में परिवर्तन हुआ यही व्यञ्जन सन्धि कहलाती है । इस सन्धि में प्रथम वर्ण एवं दूसरा वर्ण स्वर या व्यञ्जन कुछ भी हो सकता है । लेकिन दोनों में से कम से कम एक वर्ण व्यञ्जन होना अनिवार्य है ।

13.3.3 विसर्ग सन्धि

जब पूर्व पद का अन्तिम वर्ण विसर्ग और उत्तर पद का प्रथम वर्ण स्वर अथवा व्यञ्जन होता है, तब परिवर्तन विसर्ग में होता है । तो यह "विसर्ग-सन्धि" कहलाती है । जैसे- नमः + कारः = नमस्कारः । "नमः" और "कारः" में 'नमः' का अन्तिम विसर्ग तथा 'कारः' के प्रथम स्वर वर्ण 'क्' इन दोनों वर्णों के मिलने से विसर्ग में परिवर्तन हुआ यही विसर्ग सन्धि कहलाती है । ध्यान रहे इसका प्रथम शब्द का अन्तिम वर्ण विसर्ग ही होगा । द्वितीय शब्द का आदि वर्ण स्वर या व्यञ्जन कुछ भी हो सकता है ।

13.4 स्वर-सन्धि के प्रकार

जैसाकि पूर्व में बतलाया गया है कि दो स्वर वर्णों का अर्थात् एक स्वर के साथ दूसरे स्वर का मेल होने से जो परिवर्तन होता है, उसे "स्वर सन्धि" कहते हैं । जैसे- "विद्या" और "आलय" में विद्या के अन्तिम में स्वर वर्ण 'आ' तथा आलय के आदि में स्वर वर्ण 'आ' इन दोनों स्वर वर्णों के मिलने से यहां दीर्घ नामक स्वर सन्धि हुई है। स्वर सन्धि के मुख्य पांच भेद निम्नलिखित हैं-

1) दीर्घ सन्धि
2) यण् सन्धि
3) गुण सन्धि
4) वृद्धि सन्धि
5) अयादि सन्धि

13.4.1 दीर्घ सन्धि

ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ एवं ऌ के बाद क्रमशः इनके समान ह्रस्व या दीर्घ स्वर आ जायें तो दोनों के मेल से सवर्ण अथवा समान स्वर दीर्घ स्वर हो जाता है । इस प्रकार ह्रस्व या दीर्घ के भेद से दीर्घ सन्धि के अनेक प्रकार होते हैं। इनको निम्नलिखित प्रकार से समझा जा सकता है ।

1. अ की दीर्घ सन्धि

अ + अ	=	आ	राम + अवतार	=	रामावतार
अ + आ	=	आ	भोजन + आलय	=	भोजनालय
आ + अ	=	आ	रमा + आलय	=	रमालय
आ + आ	=	आ	विद्या + आलय	=	विद्यालय

2. इ की दीर्घ सन्धि

इ + इ	=	ई	रवि + इन्द्र	=	रवीन्द्र
इ + ई	=	ई	गिरि + ईश	=	गिरीश
ई + इ	=	ई	नदी + इन्द्र	=	नदीन्द्र
ई + ई	=	ई	नदी + ईश	=	नदीश

3. उ की दीर्घ सन्धि

उ + उ	=	ऊ	भानु + उदय	=	भानूदय
उ + ऊ	=	ऊ	लघु + ऊर्मि	=	लघूर्मि
ऊ + उ	=	ऊ	वधू + उत्सव	=	वधूत्सव
ऊ + ऊ	=	ऊ	भू + ऊर्ध्व	=	भूर्ध्व

4. ऋ की दीर्घ सन्धि

ऋ + ऋ	=	ॠ	पितृ + ऋणम्	=	पितॄणम्

5. ऌ के उदाहरण बहुत ही कम प्रयुक्त होते हैं ।

दीर्घ सन्धि के अन्य उदाहरण भी देखे जा सकते हैं-

i) राम + अयनम् = रामायणम्

ii) पुरुष + अर्थः = पुरुषार्थः

iii) राम + आज्ञा = रामाज्ञा

iv) परम + आचार्यः = परमाचार्यः

v) भ्रातृ + ऋणम् = भ्रातृणम्

vi) वर्षा + अन्तः = वर्षान्तः

vii) दया + अर्थी = दयार्थी

viii) सुधा + आकरः = सुधाकरः

ix) महा + आशयः = महाशयः

13.4.2 यण् सन्धि

अगर कोई भी इक् प्रत्याहार में आने वाले वर्ण के पश्चात् कोई भी अच् प्रत्याहार में आने वाला असमान अच् हो तो इक् के स्थान अर्थात् पूर्व वर्ण के स्थान पर यण् प्रत्याहार का वर्ण आदेश हो जाए । सरल शब्दों में इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ एवं ऌ के बाद कोई असमान स्वर आए तो इनका परिवर्तन क्रमशः य, व्, र एवं ल् में हो जाता है । इसे "यण् सन्धि" कहते हैं । चूंकि इक् में कुल मूल चार वर्ण इ, उ, ऋ एवं ऌ हैं एवं आदेश यण् अर्थात् य्, व्, र् एवं ल् भी चार हैं तो ये क्रमशः आदेश होंगे अर्थात् इ के स्थान पर य्, उ के स्थान पर व्, ऋ के स्थान पर र् एवं ऌ के स्थान ल् आदेश हो जाते हैं । जैसे- प्रति + एकम् = प्रत्येकम् । इस सन्धि में प्रति शब्द के अन्तिम वर्ण 'इ' की एकम् शब्द के आदि वर्ण 'ए' के साथ निकटता होने पर ई के स्थान पर 'य्' वर्ण हो गया ।

सामान्य शब्दों कह सकते हैं कि यदि

a. इ या ई के बाद कोई असमान स्वर होने पर इ या ई को 'य्' हो जाता है ।

b. उ या ऊ के बाद कोई असमान स्वर होने पर उ या ऊ को 'व्' हो जाता है।

c. ऋ या ॠ के बाद कोई असमान स्वर होने पर ऋ या ॠ को 'र्' हो जाता है।

d. ऌ के बाद कोई असमान स्वर होने पर ऌ को 'ल्' हो जाता है ।

उदाहरण के लिए

i) इति + आदि = इत्यादि (इ = य्)

ii) देवी + आवाहन = देव्यावाहन (ई = य्)

iii) सु + आगत = स्वागत (उ = व्)

iv) वधू + आगमन = वध्वागमन (ऊ = व्)

v) पितृ + आदेश = पित्रादेश (ऋ = र्)

इसी प्रकार

यदि + अपि = यद्यपि

प्रति + एक = प्रत्येक

नदी + अर्पण = नद्यर्पण

देवी+ अर्चन = देव्यार्चन

अनु + अय = अन्वय

अनु + एषण = अन्वेषण

पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा

13.4.3 गुण सन्धि

अ अथवा आ के बाद इ, ई हो तो ए हो एवं उ, ऊ हो तो औ और अगर ऋ हो तो अर् तथा ऌ वर्ण हो तो अल् आदेश हो जाता है । उसे "गुण सन्धि" कहते हैं। जैसे- महा + ईश्वरः = महेश्वरः । यहाँ पर महा शब्द के अन्तिम वर्ण 'आ' एवं ईश्वरः शब्द के आदि वर्ण 'ई' के साथ निकटता होने पर दोनों वर्णों के स्थान पर 'ए' वर्ण हो गया। इसी प्रकार निम्न उदाहरणों में गुण सन्धि देखी जा सकती है -

i) नर + इन्द्रः = नरेन्द्रः (अ + इ = ए)

ii) नर + ईशः = नरेशः (अ + ई = ए)

iii) महा + इन्द्रः = महेन्द्रः (आ + इ = ए)

iv) महा + ईशः = महेशः (आ + ई = ए)

v) ज्ञान + उपदेशः = ज्ञानोपदेशः (अ + उ = ओ)

vi) महा + उत्सवः = महोत्सवः (आ + उ = ओ)

vii) जल + ऊर्मिः = जलोर्मिः (अ + ऊ = ओ)

viii) महा + ऊर्मिः = महोर्मिः (आ + ऊ = ओ)

ix) महा + ऋषिः = महर्षिः (अ + ऋ = अर्)

x) देव + ऋषिः = देवर्षिः (अ + ऋ = अर्)

xi) तव +ऌकारः = तवल्कारः (अ + ऌ = अल्)

xii) माला +ऌकारः = मालल्कारः (आ + ऌ = अल्)

इसी प्रकार से

देव + इन्द्रः = देवेन्द्रः

नर + ईशः = नरेशः

महा + इन्द्रः = महेन्द्रः

महा + ईशः = महेशः

पुरुष + उत्तमः = पुरुषोत्तमः

कुसुम + उत्सवः = कुसुमोत्सवः

उदक + ऊर्मिः = उदकोर्मिः

सप्त + ऋषिः = सप्तर्षिः

राज + ऋषिः = राजर्षिः

हिम + ऋतुः = हिमर्तुः

ग्रीष्म + ऋतुः = ग्रीष्मर्तुः

13.4.4 वृद्धि सन्धि

जब अ अथवा आ स्वर का मेल एच् (ए, ओ, ऐ, औ) वर्ण के साथ होता है । तो पूर्ववर्ण और परवर्ण दोनों वर्णों के स्थान पर एकादेश के रूप में ऐ, औ वर्ण के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं । सामान्य शब्दों में, जब अ, आ का ए या ऐ (अ / आ + ए / ऐ = ऐ) से मेल होने पर ऐ तथा अ, आ का ओ या औ (अ / आ + ओ / औ = औ) से मेल होने पर औ हो जाता है । तो उसे "वृद्धि सन्धि" कहते हैं । जैसे- सदा + एव = सदैव । यहाँ "सदा" और "एव" में सदा के अन्तिम स्वर वर्ण 'आ' तथा एव के प्रथम स्वर वर्ण 'ए' इन दोनों स्वर वर्णों के मिलने से दोनों स्वरों के स्थान पर "ऐ" हो गया । इसी प्रकार अन्य उदाहरण निम्न हैं-

i) एक +एकः = एकैकः (अ + ए = ऐ)

ii) मत +ऐक्यम् = मतैक्यम् (अ + ऐ = ऐ)

iii) महा +ओघः = महौघः (आ + ओ = औ)

iv) महा +औषधः = महौषधः (आ + औ = औ)

इसी प्रकार

महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य

वन + औषधि = वनौषधि

महा + औषधि = महौषधि

परम + औषध = परमौषध

13.4.5 अयादि सन्धि

संयुक्त स्वर (ए, ओ, ऐ, औ) के बाद असमान अच् होने से उत्पन्न परिवर्तन को "अयादि सन्धि" कहते है । अर्थात् एच् प्रत्याहार अर्थात् ए, ओ, ऐ, औ वर्ण के पश्चात् इन्हें छोड़कर कोई अन्य स्वर हो तो ए को अय्, ओ को अव्, ऐ को आय्, औ को आव् वर्ण हो जाते हैं । इसे "अयादि सन्धि या अयादिचतुष्टय" कहा जाता है । जैसे- नै + अकः = नायकः। यहाँ "नै" और "अकः" में नै का अन्तिम वर्ण 'ऐ' तथा अकः के प्रथम स्वर वर्ण 'अ' इन दोनों स्वर वर्णों के मिलने से ऐ के स्थान पर आय् हो गया । इसी प्रकार अन्य उदाहरण निम्न हैं-

i) ने + अनम् = नयनम् (ए का अय्)

ii) नै + अकः = नायकः (ऐ का आय्)

iii) पो + अनः = पवनः (ओ का अव्)

iv) पौ + अकः = पावकः (औ का आव्)

इसी प्रकार

ने + अनम् = नयनम्

गै + अकः = गायकः

भो + अति = भवति

द्वौ + अपि = द्वावपि

नौ + इकः = नाविकः

13.5 विसर्ग-सन्धि

जब पहले शब्द का अन्तिम वर्ण विसर्ग और उत्तर पद का प्रथम वर्ण स्वर अथवा व्यञ्जन होने पर विसर्ग के स्थान पर परिवर्तन होता है । तो यह सन्धि "विसर्ग-सन्धि" कहलाती है । यथा- बालः + अस्ति = बालोऽस्ति । यहाँ "बालः" और "अस्ति" में बालः का अन्तिम वर्ण ':' तथा अस्ति के प्रथम स्वर वर्ण 'अ' इन दोनों के मिलने से विसर्ग का लोप हो गया । और अकार को अवग्रह (ऽ) हो गया।

विसर्ग सन्धि के मुख्य भेद निम्नलिखित हैं-

i) उत्व सन्धि

ii) सत्व सन्धि

iii) रुत्व सन्धि

iv) लोप सन्धि

13.9.1 उत्व सन्धि

विसर्ग के बाद स्वर या व्यञ्जन आने पर विसर्ग का उ वर्ण में बदल जाना ही "उत्व सन्धि" कहलाता है। इसके दो प्रकार निम्न हैं ।

i. यदि विसर्ग से पहले अ हो और विसर्ग के बाद वर्ग का तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम वर्ण या फिर य्, र्, ल्, व्, ह् इनमें से कोई वर्ण होने पर विसर्ग को उ हो जाता है । इसके पश्चात् पूर्व अ के साथ उ के मिलने पर गुण होकर ओ हो जाता है । जैसे- मनः + रथः = मनोरथः । यहाँ "मनः" और "रथः" में मनः का अन्तिम वर्ण अकार पूर्वक विसर्ग (:) है तथा रथ का प्रथम वर्ण 'र्' है । इन दोनों के मिलने से विसर्ग के स्थान पर उ हो गया । इसके बाद अ + उ को गुण ओ हो गया । इसी प्रकार अन्य उदाहरण निम्न हैं-

i) शिवः + वन्द्यः = शिवो वन्द्यः

ii) रामः + हसति = रामो हसति

iii) बालः + याति = बालो याति

iv) बुधः + लिखति = बुधो लिखति

v) बालः + रौति = बालो रौति

vi) नमः + नमः = नमो नमः

vii) रामः + जयति = रामो जयति

viii) क्षीणः + भवति = क्षीणो भवति

ix) मनः + हरः = मनोहरः

x) यशः + दा = यशोदा

ii. यदि विसर्ग से पहले अ और बाद में अ वर्ण होने पर विसर्ग को उ हो जाता है। इसके पश्चात् पूर्व अ के साथ उ के मिलने पर गुण होकर ओ हो जाता है। तथा बाद वाले अ को अवग्रह (ऽ) हो जाता है । जैसे- सः + अवदत् = सोऽवदत् । यहाँ "सः" और "अवदत्" में सः का अन्तिम वर्ण अकार के पश्चात् विसर्ग (:) है तथा अवदत् का प्रथम वर्ण 'अ' है । इन दोनों के मिलने

से विसर्ग के स्थान पर उ हो गया। इसके बाद अ + उ को गुण ओ हो गया। तथा बाद वाले अ को अवग्रह (ऽ) हो गया। इसी प्रकार अन्य उदाहरण निम्न हैं-

i) कः + अपि = कोऽपि

ii) यः + अद्य = योऽद्य

iii) कः + अयम् = कोऽयम्

iv) करः + अपि = करोऽपि

v) नरः + अस्ति = नरोऽस्ति

vi) रामः + अवदत् = रामोऽवदत्

vii) रामः + अयम् = रामोऽयम्

viii) वातः + अवहत् = वातोऽवहत्

ix) तेज + अवर्धत = तेजोऽवर्धत

x) सः + अभणत् = सोऽभणत्

13.9.2 सत्व सन्धि

विसर्ग स्थिति विशेष में विसर्ग का स् वर्ण में बदल जाना ही "सत्व सन्धि" कहलाता है । जिनमें विसर्ग को स् के साथ-साथ श्, ष् भी हो जाता है । इन्हीं को सत्व, शत्व, षत्व के नाम से भी जाना जाता है । यह सन्धि उदाहरणसहित निम्न हैं-

i. विसर्ग के बाद त्, थ्, स् हो तो विसर्ग के स्थान पर स् हो, अगर विसर्ग के बाद च्, छ्, श् हो तो विसर्ग के स्थान पर श् हो और यदि अगर विसर्ग के बाद ट्, ठ्, ष् हो तो विसर्ग के स्थान पर ष् हो जाता है । जैसे- रामः + तु = रामस्तु । यहाँ "रामः" और "तु" में रामः का अन्तिम वर्ण विसर्ग (:) है तथा तु का प्रथम वर्ण 'त्' है । इन दोनों के मिलने से विसर्ग के स्थान पर स् हो गया । इसी प्रकार अन्य उदाहरण निम्न हैं-

i) निः + संतानः = निस्संतानः

ii) निः + तेजः = निस्तेजः

iii) रामः + तथा = रामस्तथा

iv) दुः + शासनम् = दुश्शासनम्

v) तेजः + छाया = तेजश्छाया

vi) निः + चलः = निश्चलः

vii) धनुः + टकारः = धनुष्टकारः

viii) रामस् + टीकते = रामष्टीकते

ix) कृष्णः + षष्ठः = कृष्णष्षष्ठः

x) कः + तर्हि = कस्तर्हि

13.9.3 रुत्व सन्धि

विसर्ग से पहले अ या आ को छोड़कर कोई अन्य स्वर हो तथा विसर्ग के बाद कोई स्वर या वर्ग का तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम वर्ण या फिर य्, र्, ल्, व्, ह् इनमें से कोई वर्ण होने पर विसर्ग के स्थान पर र् हो जाता है । जैसे- भानुः + अयम् = भानुरयम्। यहाँ "भानुः" और "अयम्" में भानुः का अन्तिम वर्ण विसर्ग (:) है तथा अयम् का प्रथम वर्ण 'अ' अर्थात् स्वर है । इन दोनों के मिलने से विसर्ग के स्थान पर र् हो गया । इसी प्रकार अन्य उदाहरण निम्न हैं-

i) निः + गुण = निर्गुण

ii) वधूः + ऊढा = वधूरूढा

iii) दुः + उपयोग = दुरूपयोग

iv) मतिः + इयम् = मतिरियम्

v) शिशुः + लिखति = शिशु र्लिखति

vi) मुनिः + यत्र = मुनि र्यत्र

vii) मुनिः + वसति = मुनि र्वसति

viii) शत्रुः + हतः = शत्रु र्हतः

ix) मुनिः + गतः = मुनि र्गतः

x) कीर्तिः + वर्धते = कीर्ति र्वर्धते

13.9.4 लोप सन्धि

विसर्ग से पहले अ या आ हो तथा विसर्ग के बाद कोई भिन्न स्वर या वर्ग का तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम वर्ण या फिर य्, र्, ल्, व्, ह् इनमें से कोई वर्ण हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है एवं पास-पास आये हुए स्वरों की सन्धि नहीं होती । जैसे- देवः + इच्छति = देव इच्छति । यहाँ "देवः" और "इच्छति" में देवः का अन्तिम वर्ण विसर्ग (:) है तथा इच्छति का प्रथम वर्ण 'इ' अर्थात् स्वर है । इन दोनों के मिलने से विसर्ग का लोप हो गया । इसी प्रकार अन्य उदाहरण निम्न हैं-

i) कः + उवाच = क उवाच

ii) अतः + एव = अत एव

iii) देवाः + गताः = देवा गताः

iv) ताः + लताः = ता लताः

v) देवाः + इह = देवा इह

vi) सूर्यः + उदेति = सूर्य उदेति

vii) देवः + इच्छति = देव इच्छति

viii) दुर्जनः + ईर्ष्यति = दुर्जन ईर्ष्यति

ix) नराः + वहन्ति = नरा वहन्ति

x) ताः + नमन्ति = ता नमन्ति

13.6 बोध/ अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित में सन्धि पहचान कर सन्धि-विच्छेद कीजिए ।

   कपीशः, नरेशः, पितॄणम्, सदैव, यद्यपि, नयनम्, मनोरथः, देवश्शेते, रामष्टीकते, भानुस्तपति, भानुरयम्, देव इच्छति, शिशुर्लिखति, अतएव, होतृकारः ।

2. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए ।

   i) वृथा + अटनम् = ...

   ii) इति + उभो = ...

   iii) राजमार्गेण + एव = ...

   iv) पूर्व + इतरम् = ...

   v) भो + अनम् = ...

   vi) रामः + तथा =.....

   vii) दुः + शासनम् = ...

   viii) निः + चलः = ...

   ix) धनुः + टकारः = ...

   x) वधूः + ऊढा = ...

   xi) दुः + उपयोग = ...

xii) रामः + जयति = ...

xiii) मनः + हरः = ...

xiv) यः + अद्य = ...

xv) कः + अयम् = ...

3. निम्नलिखित रिक्त स्थानों पर सन्धि विच्छेद कर लिखिए ।

i) हिताहितम् = ... + ...

ii) पश्चिमोत्तरम् = ... + ...

iii) नमाम्येनम् = ... + ...

iv) वृकोदरेण = ... + ...

v) इहागतः = ... + ...

vi) वदतीति = ... + ...

vii) भावुकः =.....+ .....

viii) शायिकाः = ...+ .....

ix) चयनम् =.....+.....

x) शिशोऽत्र= .....+ .....

xi) तावपि =..... +.....

xii) तवैवास्ति =..... +..... + ...

xiii) साधूपरि =..... +.....

xiv) अत्याचारः= ..... + ...

xv) मुनीन्द्राः =.....+.....

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।

i) सन्धि किसे कहते हैं ?

ii) सन्धि के कुल कितने भेद हैं ?

iii) स्वर सन्धि के कुल भेद एवं उनके नाम भी लिखिए ।

iv) अयादि सन्धि अथवा अयादिचतुष्टय से क्या तात्पर्य है ?

v) विसर्ग सन्धि को परिभाषित कीजिए ।

13.7 सारांश

इस इकाई में संस्कृत सन्धि का ज्ञान कराया गया । सन्धि तीन प्रकार की होती हैं । स्वर, व्यञ्जन एवं विसर्ग । दो स्वरों के मध्य स्वर सन्धि होती है । व्यञ्जन एवं स्वर या व्यञ्जन के मध्य व्यञ्जन सन्धि एवं विसर्ग एवं स्वर अथवा व्यञ्जन मे मध्य विसर्ग सन्धि होती है।

13.8 शब्दावली

सन्धि	'मेल' या 'मिलाना' ।
सन्धि भेद	स्वर, व्यञ्जन, विसर्ग सन्धि ।
अयादिचतुष्टय	अय्, अव्, आय् एवं आव् ।
संयुक्त वर्ण	एच् प्रत्याहार में आने वाले वर्ण (ए, ओ, ऐ, औ) ।
स्वर सन्धि	दो स्वरों की सन्निकटता से उन स्वर में होने वाला परिवर्तन ।
विसर्ग सन्धि	वर्ण विशेष के कारण विसर्ग में होने वाला परिवर्तन ।
व्यञ्जन सन्धि	वर्ण विशेष के कारण व्यञ्जन में होने वाला परिवर्तन ।

13.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. चक्रधर नौटियाल हंस, अनुवाद चन्द्रिका, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर, दिल्ली, 2013.
2. कपिल द्विवेदी, रचनानुवादकौमुदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2019.
3. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, रूपचन्द्रिका, चौखम्बा सुरभारती, 2020.
4. गिरीश नाथ झा, व्यावहारिक संस्कृत धातुरूपावली, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, 2015.
5. मुरारीलाल शर्मा, संस्कृत- शब्द- धातु- रूपावली, हंसा प्रकाशन जयपुर, 2012.
6. ई-टूल्स: http://sanskrit.jnu.ac.in/tinanta/tinanta.jsp
7. ई-टूल्स: http://cl.sanskrit.du.ac.in

13.10 बोध/ अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. सन्धि पहचान एवं विच्छेद-

i) कपीशः = कपि + ईशः, दीर्घ सन्धि
ii) नरेशः = नर + ईशः, गुण सन्धि
iii) पितृणम् = पितृ + ऋणम्, दीर्घ सन्धि
iv) सदैव = सदा + एव, वृद्धि सन्धि
v) यद्यपि = यदि +अपि, यण् सन्धि
vi) नयनम् = ने + अयनम्, अयादि सन्धि
vii) मनोरथः = मनः + रथः, उत्व सन्धि
viii) देवश्शेते = देवः + शेते, शत्व सन्धि
ix) रामष्टीकते =रामः + टीकते, षत्व सन्धि
x) भानुस्तपति = भानुः+ तपति, सत्व सन्धि
xi) भानुरयम् = भानुः + अयम्, रुत्व सन्धि
xii) देव इच्छति = देवः + इच्छति, लोप सन्धि
xiii) शिशुर्लिखति = शिशुः + लिखति, रुत्व सन्धि
xiv) अतएव = अतः + एव, लोप सन्धि
xv) होतृकारः = होतृ + ऋकारः, दीर्घ सन्धि

2. निम्नलिखित सन्धि एवं सन्धि-विच्छेद के उत्तर-

i) वृथा + अटनम् = वृथाटनम्
ii) इति + उभो = इत्युभो
iii) राजमार्गेण + एव = राजमार्गेणैव
iv) पूर्व + इतरम् =पूर्वेतरम्
v) भो + अनम् = भवनम्
vi) रामः + तथा = रामस्तथा
vii) दुः + शासनम् = दुश्शासनम्
viii) निः + चलः = निश्चलः
ix) धनुः + टकारः = धनुष्टकारः
x) वधूः + ऊढा = वधूरूढा
xi) दुः + उपयोग = दुरूपयोग
xii) रामः + जयति = रामो जयति
xiii) मनः + हरः = मनोहरः
xiv) यः + अद्य = योऽद्य
xv) कः + अयम् = कोऽयम्

3. निम्नलिखित रिक्त स्थानों के उत्तर-

i) हिताहितम् = हित + अहितम्

ii) पश्चिमोत्तरम् = पश्चिम + उत्तरम्

iii) नमाम्येनम् = नमामि + एनम्

iv) वृकोदरेण = वृक + उदरेण

v) इहागतः = इह + आगतः

vi) वदतीति = वदति + इति

vii) भौ+उक:

viii) शै + इका:

ix) चे + अयनम्

x) शिशो + अत्र

xi) तौ + अपि

xii) तव + एव + अस्ति

xiii) साधु + उपरि

xiv) अति + आचारः

xv) मुनि + इन्द्राः

4. वाक्यों में चिन्हित शब्दों के उत्तर-

i) अत्यन्त समीपवर्ती दो वर्णों के मेल से जो परिवर्तन अथवा विकार आता है, उसे "सन्धि" कहते हैं।

ii) सन्धि के कुल तीन भेद हैं- स्वर, व्यञ्जन एवं विसर्ग सन्धि ।

iii) स्वर सन्धि के मुख्य पाँच भेद हैं- दीर्घ सन्धि, यण् सन्धि, गुण सन्धि, वृद्धि सन्धि एवं अयादि सन्धि ।

iv) संयुक्त स्वर (ए, ओ, ऐ, औ) के बाद इन्हें छोड़कर कोई अन्य स्वर हो तो ए को अय्, ओ को अव्, ऐ को आय्, औ को आव् वर्ण हो जाते हैं । इसे "अयादि सन्धि या अयादिचतुष्टय" कहा जाता है ।

v) जब पहले शब्द का अन्तिम वर्ण विसर्ग और उत्तर पद का प्रथम वर्ण स्वर अथवा व्यञ्जन होने पर विसर्ग के स्थान पर परिवर्तन होता है । तो इसे "विसर्ग-सन्धि" कहते हैं । यथा- बालः + अस्ति = बालोऽस्ति ।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY